c. अभि praef. सम् *id.* MAH. 1.6287. 3.10990.

c. आ *id.* NALOD. 3.15.: नला ऽद्रव.

c. आ praef. प्र aufugere. MAH. 1.2843.: भीताः प्राद्रवन्ति.

c. आ praef. सम् accurrere, incursare. R. Schl. I. 18.14.: समाद्रवत्. ATM. N. 13.8.: समाद्रवन्त.

c. उप *id.* MAH. 2.1091. 3.1299.

c. उप praef. प्र *id.* N. 1.25.

c. प्र procurrere, profugere, aufugere. BR. 1.19.: प्रद्रवेयम् अनामयम्; N. 10.19.: सुप्ताम् उत्सृज्य वैदर्भीम् प्राद्रवद् गतचेतसः; 12.116. 13.30. 22.11. DR. 8.56. A. 6.8. Incursare. MAH. 1.8269.

c. प्र praef. वि diffugere, aufugere. MAH. 3.861.: दिशः सर्वे विप्रदुद्रुवुः; R. Schl. I. 55.22.: विप्रद्रुता भीता मुनयः शतशो दिशः; MAH. 1.8323.: निवेशनाद् विप्राद्रवन्.

c. प्र praef. सम् procurrere, profugere, aufugere. MAH. 3.239. 571. 888.

c. वि discurrere, diffugere, aufugere. N. 13.18.: विद्रवन्ति भयात् तदा; SA. 7.4. DR. 8.25. 35. 40. — ATM. SU. 2.16.: व्यद्रवन्त.

2. द्रु 5. P. (अनुतापे) poenitere. (Germ. vet. *DRUZ*, v. gr. comp. 109[b]. 1., *ga-driuzit, ar-driuzit* piget.)

द्रुड् 1. P. 6. P. (मज्जने) mergi, submergi.

द्रुण् 6. P. (गतौ K. जैह्म्ये गतौ वधे V.) ire; curvum, flexuosum esse; occidere.

द्रुम *m.* (ut videtur pro द्रुह्म, a r. द्रुह् crescere, s. म, sicut jam in priore hujus libri editione रोमन्, pro रोह्मन्, a r. रुह् crescere deduximus, cf. Benfey I. 96.) arbor. N. 11.39. (Cf. gr. δρῦς, goth. *triu* arbor, nisi pertinent ad दारु, q. v., ejecto आ; gr. δένδρον, forma redupl., v. gr. 570.)

द्रुमाय् A. (*Denom.* a द्रुम s. य्, v. gr. 585.) arborem aequare, arborem haberi, videri. HIT. 20.22.

द्रुह् 4. P. *interdum* A. 1) nocere, infestare, inimicum, infensum esse *alicui*, offendere, laedere *alqm*, *cum dat. vel. loc. vel acc. pers.* HIT. 70.14.: तत् कथन् द्रुह्यति; R. Schl. II. 25.17.: महाद्विपाश्च सिंहाश्च ... न ते द्रुह्यन्तु पुत्रक; II. 75.22.: तस्मै स द्रुह्यताम् पापो यस्या ऽऽर्यो ऽनुमते गतः; MAH. 3.11471.: द्रोग्धव्यन् नच मित्रेषु; 2.2107.: पाण्डवान् मा द्रुहः; MAN. 2.144.: तन् न द्रुह्यात् कदाचन. 2) rem malam, perniciosam moliri, *c. acc. rei.* HIT. 69.14.: स नृपतेः प्राणान्तिकन् द्रुह्यति. (Cf. द्रू; hib. *driuch* «fretfulness, anger», *droch* «bad, evil»; *subst. m.* «death»; germ. vet. *TRUG* fallere, fraudare, (*triugu, troug, trugumês*); *drawian* minari; lett. *drau-deht* minari (*deht* facere); lat. *trux, atrox*, आद्रुह्?)

c. अभि *i. q. simpl.* MAH. 3.10102.: मा पास्त्वम् अभिद्रुग्धाः; *c. gen.* RIGV. 5.10.: मा नो मर्ता अभिद्रुहन् तनूनाम् «ne nostra mortales laedant corpora».

द्रू 9. P. A. (हिंसायाम् K. वधे गतौ V.) ferire, laedere, occidere; ire. *Cf.* द्रुह्.

द्रेक् 1. A. (शब्दोत्साहयोः K. स्वनोत्साहे V.) sonare; posse.

द्रै 1. P. dormire; v. निद्रा. (Lat. *dor-mio*; gr. δαρθάνω; sax. vet. *drôm* somnium; nostrum *Traum*; slav. *drjemati* dormitare.

द्रोण *m. nom. pr.* A. 11.3.

द्रोह *m.* (r. द्रुह् s. अ) offensio, laesio. BH. 1.38.

द्रौपदी *f.* (a द्रौपद, quod a द्रुपद s. अ, v. gr. 648.) *n. pr.* DR. 1.5.

द्व v. द्वि.

द्वन्द *n.* par *animalium, v. sq.*

द्वन्द्व *n.* (forma redupl. a द्व insertâ nasali) 1) duplicitas. BH. 2.45. 2) par *animalium*. AM. 3) rixa, lis, altercatio, certamen. HIT. 87.20. 4) compositum copulativum (gr. 655.). BH. 10.33.

द्वादश (*fem.* -शी, gr. 259.) duodecimus. N. 17.2.

द्वादशन् (e द्व producto अ et दशन्) duodecim. (Gr. δώδεκα; lat. *duodecim*; hib. *dadeug*; hindost. *bâ-reh*, mutato *d* in *r*; lith. *dwy-lika*, mutato *d* in *l*; ita goth. *tva-lif* cum gutturali pro labiali, nostrum *zwö-lf*; v. gr. comp. 319. annot.)